International Journal of Sanskrit Research 2022; 8(5): 243-246

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2022; 8(5): 243-246
© 2022 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 03-09-2022
Accepted: 02-10-2022

स्वयंप्रभा
शोधछात्रा, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

Corresponding Author:
स्वयंप्रभा
शोधछात्रा, संस्कृत विभाग,
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली,
भारत

इण्डोनेशिया से प्राप्त प्राचीनतम संस्कृत अभिलेखों का अध्ययन

स्वयंप्रभा

प्रस्तावना

भारत और इण्डोनेशिया के सम्बन्ध सहस्राधिक वर्ष पुरातन हैं। भारत और इण्डोनेशिया के सम्बन्धों का प्राचीनतम साक्ष्य महर्षि वाल्मीकिकृत रामायण में उपलब्ध होता है। वाल्मीकीय रामायण के किष्किन्धा काण्ड में उल्लिखित विवरणानुसार वानरराज सुग्रीव ने सीतान्वेषण के उद्देश्य से अपने दूतों को चारों दिशाओं में भेजा था तथा उन्हें यात्रा-मार्ग का आवश्यक दिशा-निर्देश भी दिया था। इसी क्रम में उन्होंने विनत नामक यूथपति को सुदूर पूर्व में सात राज्यों से सुशोभित यव-द्वीप, सुवर्ण-द्वीप तथा रूप्यक-द्वीप में सीता को ढूँढने के लिए कहा था-

यत्नवन्तो यवद्वीपं सप्तराज्योपशोभितम्
सुवर्णरूप्यकद्वीपं सुवर्णाकरमण्डितम् ॥30॥
यवद्वीपमतिक्रम्य शिशिरो नाम पर्वतः ।
दिवं स्पृश्यति शृंगेण देवदानवसेवितम् ॥31॥[1]

ऐतिहासिक साक्ष्यों एवं साहित्यिक उद्धरणों से स्पष्ट है कि प्राचीन काल में जावा को यवद्वीप तथा सुमात्रा को सुवर्णद्वीप कहा जाता था। रामायण का उपर्युक्त प्रसङ्ग 'दिग्वर्णन' के नाम से प्रसिद्ध है जिसमें प्रकारान्तर से सम्पूर्ण एशिया महादेश के समकालीन भूपरिदृश्य का चित्रण हुआ है। रामायण का यह 'दिग्वर्णन' बौद्धग्रन्थ 'सद्धर्मस्मृत्युपाख्यानसूत्र' में भी उद्धृत है। यह रचना प्रथम शताब्दी ईस्वी की है। इसका षष्ठ शताब्दी ईस्वी में चीनी भाषा में अनुवाद हुआ था।[2] उपर्युक्त विवरण भारत और इण्डोनेशिया के सम्बन्धों की प्राचीनता की पुष्टि करते हैं तथा सिद्ध करते हैं कि भारत एवम् इण्डोनेशिया के परस्पर सम्बन्ध रामायण काल से ही हैं।

संस्कृत तथा संस्कृति की भारत एवम् इण्डोनेशिया के सम्बन्धों की प्रगाढ़ता के सन्दर्भ में अत्यन्त महत्त्वपूर्ण भूमिका रही है। ईसा की प्रारम्भिक शताब्दियों में संस्कृत भाषा ने एक सर्वाधिक उत्कृष्ट एवं समृद्ध भाषा के रूप में एकसूत्रित करने का कार्य किया था। प्रारम्भ में तो यह सम्भ्रान्त एवं बुद्धिजीवी वर्गों की ही भाषा थी परन्तु कालान्तर में इसने एक अंतर्राष्ट्रीय भाषा के रूप में दक्षिण-पूर्वी एशिया के विभिन्न देशों के जनसाधारण के सांस्कृतिक जीवन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी।

दक्षिण-पूर्वी एशिया में वर्त्तमान समय में कुल दस देश हैं। इन्हीं दस देशों में अन्यतम- इण्डोनेशिया तथा भारत के सम्बन्धों को विशिष्ट गति ईसा की प्रथम, द्वितीय एवं तृतीय शताब्दी में प्राप्त हुई जब भारत तथा बृहत्तर भारत के मध्य सामुद्रिक एवं वाणिज्यिक क्रियाओं का विलक्षण विकास हुआ। वाणिज्यिक तथा व्यापारिक उद्देश्य से की गयी इन सामुद्रिक गतिविधियों ने प्रवास एवं स्थानान्तरगमन को अत्यन्त प्रोत्साहित किया जिसके फलस्वरूप भारत की संस्कृत भाषा तथा भारत की संस्कृति का व्यापक विस्तार हुआ। इण्डोनेशिया के मूल निवासी भारतीय संस्कृति तथा संस्कृत भाषा से अत्यन्त आकर्षित एवं प्रभावित हुए। उन्होंने इन्हें सहर्ष अंगीकृत किया एवं वे भारतीय प्रवासियों के साथ कुशलतापूर्वक ऐक्यभाव से जीवन व्यतीत करने लगे। उन्होंने संस्कृत एवं भारतीय संस्कृति को अपनी मौलिक संस्कृति के साथ सम्मिश्रित कर इण्डोनेशियाई संस्कृति का सम्पोषण एवं सम्वर्धन किया। परिणामस्वरूप भारतीय संस्कृति तथा संस्कृत भाषा की कान्ति इण्डोनेशाई समाज में अद्यतनीय आधुनिक युग में भी शोभायमान है। इसे इण्डोनेशियाई समाज एवं संस्कृति का सौन्दर्य एवं वैशिष्ट्य ही कहना चाहिये कि विश्व में सर्वाधिक मुस्लिम जनसंख्यायुक्त देश इण्डोनेशिया ने अपने धार्मिक विश्वास तथा संस्कृति में इस प्रकार समन्वय स्थापित किया है कि वहाँ की संस्कृति में संस्कृत तथा भारतीयता का प्रभाव अक्षुण्णतया दृश्यमान है। इण्डोनेशिया के समाज पर रामायण तथा महाभारत महाकाव्यों का प्रभाव भी वस्तुतः उनका सांस्कृतिक वैशिष्ट्य ही है।

इण्डोनेशिया के विभिन्न स्थलों से अनेक साहित्यिक, ऐतिहासिक एवं पुरातात्त्विक साक्ष्य प्राप्त हुए हैं जो भारत एवम् इण्डोनेशिया के पारस्परिक सम्बन्धों की प्राचीनता को सिद्ध करने में प्रमुख सहायक तत्त्व हैं। इन्हीं ऐतिहासिक-पुरातात्त्विक साक्ष्य के रूप में अभिलेख सर्वाधिक प्रामाणिक स्रोत हैं जो शिलाखण्डों, प्रस्तर-स्तम्भों, ताम्रपत्रों, भुर्जपत्रों इत्यादि पर उत्कीर्ण होते हैं तथा अतीत की ऐतिहासिक-तात्कालिक स्थिति को यथासंभव यथावत् प्रस्तुत करते हैं। इण्डोनेशिया के अड़तीस प्रान्तों के भिन्न-भिन्न स्थानों से पृथक्-पृथक् कालों के शताधिक अभिलेखीय प्रमाण प्राप्त हुए हैं जो संस्कृत भाषा में उत्कीर्ण हैं। इनकी लिपि भी पूर्णतः भारतीय है। इन अभिलेखों के वर्ण्य-विषयों में भारतीय संस्कृति की विशिष्टताएं स्पष्टतया परिलक्षित होती हैं। इण्डोनेशिया से प्राप्त होने वाले प्राचीनतम संस्कृत अभिलेखों के उत्कीर्णन की तिथि इतिहासविदों के द्वारा चतुर्थ शताब्दी ईस्वी निर्धारित की गई है। ये अभिलेख इण्डोनेशियाई द्वीपसमूह के पूर्वाञ्चल में स्थित बोर्नियो द्वीप से प्राप्त हुए हैं। बोर्नियो द्वीप का आधुनिक नाम कालीमन्तन द्वीप है। इस द्वीप के पूर्वी क्षेत्र में पूर्वी-कालीमन्तन नामक राज्य है जो प्राचीन समय में कुताई के नाम से प्रसिद्ध था। कुताई प्राचीन काल से ही भारतीय कला एवं संस्कृति का केंद्र रहा है। इसी राज्य के 'महाकाम' एवं 'कामन' नामक नदियों के संगम पर स्थित 'मोरा कामन' नामक स्थान से 1879 ईस्वी में अष्टभुजीय वृहद् पाषाण-स्तम्भों पर उत्कीर्ण कुछ अभिलेख प्राप्त हुए हैं। इन अभिलेखों की भाषा संस्कृत एवं लिपि पल्लव है। प्रारम्भ में यहाँ से केवल चार अभिलेख प्राप्त हुए थे जिनमें तीन अनुष्टुप् छन्द में विरचित तथा एक आर्या छन्द में विरचित हैं। इन चारों अभिलेखों की प्राप्ति के साठ वर्ष पश्चात् तीन नए अभिलेखों का संज्ञान हुआ। कोताई से प्राप्त इन सप्ताभिलेखों को 'यूपशिलालेख' कहा जाता है क्योंकि अधिकतम अभिलेखों में यूप की स्थापना का उल्लेख है। 'यूप' शब्द 'पशुबन्धनार्थं' [3] याज्ञिक-स्तम्भ का द्योतक है। इस विचार की पुष्टि 'यष्ट्वा' एवं 'यज्ञस्य' पदों से भी होती है। ये सातों अभिलेख पाषाण-स्तम्भों पर उत्कीर्ण हैं जो सम्भवतः याज्ञिक यूप रहे होंगे। इन अभिलेखों के अतिरिक्त इस स्थान से उत्खनन में विष्णु की स्वर्ण-प्रतिमा, गणेश की मूर्ति, नन्दीमूर्त्ति, शिवलिङ्ग इत्यादि अनेक मूर्त्तियाँ प्राप्त हुई हैं।

ये अभिलेख राजा मूलवर्म्मन् द्वारा उत्कीर्णित हैं। प्रथम अभिलेख में मूलवर्म्मन् के पिता और पितामह का सम्राट् के रूप में नामोल्लेख से बोर्नियो द्वीप में हिन्दू राज्य की स्थापना की तिथि कम-से-कम पचास वर्ष पूर्व अवश्यमेव चली जाती है। इससे स्पष्ट होता है कि इण्डोनेशियाई द्वीपसमूह के अन्तर्गत चतुर्थ शताब्दी ईस्वी में संस्कृत भाषा एवं भारतीय संस्कृति का वर्चस्व स्थापित हो चुका था-

प्रथम अभिलेख (अनुष्टुप् छन्द)

1. श्रीमतः श्रीनरेन्द्रस्य
2. कुण्डङ्गस्य महात्मनः
3. पुत्रोश्ववर्म्मो विख्यातः
4. वंशकर्ता यथांशुमान् (1)
5. तस्य पुत्रा महात्मानः
6. त्रयस्त्रय इवाग्नयः
7. तेषान्त्रयाणाम्प्रवरः
8. तपोबलदमान्वितः (2)
9. श्री मूलवर्म्माराजेन्द्रः
10. यष्ट्वा बहुसुवर्णकम्
11. तस्य यज्ञस्य यूपोयम्
12. द्विजेन्द्रैस्सम्प्रकल्पितः (3)

भावार्थ

नरों में इन्द्र श्रीमान् कुण्डङ्ग महान् आत्मा थे। [4] (उनके)पुत्र अश्ववर्म्मन् अंशुमान के समान वंशकर्ता थे। तीनों अग्नि के समान उनके तीन महात्मा पुत्र थे। उन तीनों में श्रेष्ठ तपोबली तथा जितेन्द्रिय राजाओं के राजा श्री मूलवर्म्मन् ने बहु सुवर्णों से यज्ञ किया। इस यज्ञ का यह यूप श्रेष्ठ द्विजों ने स्थापित किया।

द्वितीय अभिलेख के अनुसार यशस्वी शासक मूलवर्म्मा ने अग्नि के सदृश तेजस्वी ब्राह्मणों को बीस सहस्र गायों का दान दिया था तथा इसके फलस्वरूप उन ब्राह्मणों ने वप्रकेश्वर नामक स्थान पर एक यूप की स्थापना की थी -

द्वितीय अभिलेख (अनुष्टुप् छन्द)

1. श्रीमतो नृपमुख्यस्य
2. राज्ञः श्रीमूलवर्म्मणः
3. दानं पुण्यतमे क्षेत्रे
4. यदत्तम्वप्रकेश्वरे(1)
5. द्विजातिभ्योग्निकल्पेभ्यः
6. विंशतिर्गोसहस्रिकम्
7. तस्य पुण्यस्य यूपोयम्
8. कृतो विप्रैरिहागतै (:)(2)

भावार्थ

श्रीमान् नृपों के मुख्य राजा श्री मूलवर्म्मन् ने पुण्यतम धर्मस्थान 'वप्रकेश्वर' में अग्नि के सदृश (तेजस्वी) ब्राह्मणों को जिन्होंने बीस सहस्र गायों का दान दिया, उसके पुण्य का यह यूप यहाँ आए ब्राह्मणों ने स्थापित किया।

तृतीय अभिलेख में प्रमुख ब्राह्मणों तथा शिष्टजनों ने राजा श्री मूलवर्म्मन् के यशस्वी कृत्यों को जानने की अनुज्ञा करते हुए उनके द्वारा कृत बहुविध दानों का उल्लेख किया गया है-

तृतीय अभिलेख (आर्या छन्द)

1. श्रीमद्विराजकीर्तेः
2. राज्ञः श्रीमूलवर्म्मणः पुण्यम्
3. शृणवन्तु विप्रमुख्यः
4. येचान्ये साधवः पुरुषा(1)
5. बहुदानजीवदानम्
6. सकल्पवृक्षं सभूमिदानं च
7. तेषां पुण्यगणानाम्
8. यूपोयं स्थापितो विप्रैः(2)

भावार्थ

प्रधान ब्राह्मण तथा जो साधु पुरुष हैं, वे विशिष्ट राजपुरुष श्रीमूलवर्म्मन् की पुण्य कीर्त्ति को सुनें। (उनके) बहुत दान, जीवदान के साथ कल्पवृक्ष (दान) तथा (उसके) साथ भूमिदान के पुण्यगणों का यह यूप ब्राह्मणों ने स्थापित किया।

चतुर्थ अभिलेख में राजा श्री मूलवर्म्मन् की तुलना राजा सगर के पुत्र भगीरथ से की गयी है। यह अभिलेख अपूर्ण प्रतीत होता है-

चतुर्थ अभिलेख (अनुष्टुप् छन्द)

1. सागरस्य यथा राज्ञः
2. समुत्पन्नो भगीरथः(1)
3. .....
4. मूलवर्म्म.....

भावार्थ

जैसे राजा सगर के भगीरथ उत्पन्न हुए.....

.....मूलवर्म्मन्.....।

पञ्चम अभिलेख में राजा श्री मूलवर्म्मन् के द्वारा कृत दान तथा यूप की स्थापना का उल्लेख है-

पञ्चम अभिलेख

श्रीमूलवर्म्मणा राज्ञा यद्दत्तन्तिलपर्वतम् (।)
सदीपमालया सार्द्धम् यूपोयं लिखितस्तयोः (।।)

भावार्थ

राजा श्री मूलवर्म्मन् ने दीपमाला के साथ तिल पर्वत दान किया। (तदुपरान्त) उनके द्वारा यूप की स्थापना करवा कर यह लिखवाया गया।

षष्ठ अभिलेख में भी राजा श्री मूलवर्म्मन् का यशोगान करते हुए उनके द्वारा कृत बहुविध दानों का उल्लेख है -

षष्ठ अभिलेख

जयत्यतिब(लः) श्रीमान् श्रीमूलवर्म्मनृपतिः (।)
यस्य लिखितानि दानान्यस्मिन्महति.....(।।)
जलधेनुं घृतधे(नु) कपिलादानं तथैव (।)
तिलवृषभैकादशम् दत्त्वा विप्रषु राजेन्द्रः (।।)

भावार्थ

अत्यधिक बलवान राजा श्री मूलवर्म्मन् की जय हो। उनके द्वारा हम लोगों को लिखित रूप से वृहद् दान दिया गया। राजाओं के राजा के द्वारा जलधेनु (कूप या सरोवर), घृतधेनु (महिष), कपिला गाय एवं एकादश वृषभ ब्राह्मणों को दिया गया।

सप्तम अभिलेख में राजा मूलवर्म्मन् के यशस्वी कार्यों का वर्णन करते हुए मुद्रादान, चिकित्सालय, आकाशदीप तथा यूप-स्थापना का उल्लेख है-

सप्तम अभिलेख

श्री मूलवर्म्मा राजेन्द्र (:) समरे जित्य पार्थि(वान्) (।)
करदां नृपतिंश्चक्रे यथा राजा युधिष्ठिरः (।।)
चत्वारिंशत्सहस्राणि स ददौ वप्प्रकेश्वरे (।)
बा.....त्रिंशत्सहस्राणि पुनर्ददौ (।।)
.... स पुनर्जीवदानं पृथग्विधं (।)
आकाशदीपं धर्म्मात्मा पार्थिवेन्द्र (:) स्वकेपुरे (।।)
.... महात्मना (।)

यूपोयं स्था (पितो) विप्रैन्नना ..... इहा (गवैः।।)

भावार्थ

युधिष्ठिर के समान राजेन्द्र श्री मूलवर्म्मन् ने युद्ध में राज्यों को जीतकर राजाओं को करदाता बनाया। उन्होंने वप्रकेश्वर (मंदिर) को 40,000 मुद्राएं दीं..... पुनः 30,000 मुद्रा दी। इसके अतिरिक्त पुनः चिकित्सालय (जीवदान) बनवाया। धर्मात्मा राजा ने (अपनी राजधानी) स्वकेपुर में आकाशदीप (स्थापित करवाया)।.....महात्मा के द्वारा यहां आकर अनेक ब्राह्मणों से यूप स्थापित करवाया गया।

उपर्युक्त अभिलेखों के अध्ययन एवं विश्लेषण से ज्ञात होता है कि राजा मूलवर्म्मन् का साम्राज्य अत्यन्त समृद्धशाली था। समाज में ब्राह्मणों को उच्च स्थान प्राप्त था। वे धार्मिक एवं बौद्धिक क्रियाओं में संलिप्त रहते थे। यज्ञ एवं धार्मिक अनुष्ठानों का विशेष महत्त्व था। राजाओं का यज्ञों के सम्पादन के द्वारा यशवर्धन होता था। संस्कृत वहाँ की राजकीय एवं प्रमुख भाषा थी। कोताई से प्राप्त ये सप्त अभिलेख इण्डोनेशिया के प्राचीनतम उपलब्ध संस्कृत अभिलेख हैं। इन अभिलेखों में भारतीय आर्य संस्कृति की प्रतिछाया स्पष्टतया परिलक्षित होती है। अत एव ऐतिहासिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से इन अभिलेखों का विशेष महत्त्व है।

संदर्भ सूची

1. वाल्मीकीय रामायण; 4.40, 30-31
2. बुल्के, कामिल; रामकथा, पृ०-71
3. प्रो० रघुवीर, Op.Cit., p-29.
4. प्रोफेसर लोकेश चन्द्र के अनुसार अश्ववर्म्मन् के पिता का नाम नरेन्द्र है तथा कुण्डङ्ग दक्षिण-पूर्व एशिया के लिए चीनियों द्वारा प्रयुक्त 'कुन-लुन' का विकसित रूप है। तदनुरूप 'श्रीमतः महात्मनः' का अर्थ है, 'श्रीमान् श्रीनरेन्द्र दक्षिण-पूर्व एशिया के महान् पुरुष थे'।